

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 07, (दिसंबर, 2024)
पृष्ठ संख्या 51-53



जैविक खेती : एक कृषि प्रणाली

प्रीति वशिष्ठ¹ एवं प्रहलाद²

¹चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
कृषि महाविद्यालय, बावल, रेवाड़ी, हरियाणा
²भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद,
केंद्रीय कपास अनुसन्धान केंद्र, सिरसा, हरियाणा, भारत।

Email Id: – dhimanpreeti45@gmail.com

जैविक खेती वर्तमान में एक बढ़ती हुई जीवनशैली है, जो पर्यावरण और स्वास्थ्य की परवाह करने वाले लोगों के लिए एक विकल्प बन रही है। जैविक खेती की अवधारणा हानिकारक रसायनों के उपयोग के बिना प्राकृतिक रूप से फसलों और भूमि का प्रबंधन करने पर केंद्रित है। विभिन्न रसायनों और प्रदूषण के कारण पर्यावरण को होने वाले नुकसान के कारण हाल ही में प्रकृति में कई बदलाव हुए हैं। जैविक खेती की अवधारणा हमारे सामने आने वाली पर्यावरणीय और स्वास्थ्य समस्याओं का एक अच्छा समाधान प्रस्तुत करती है।

जैविक खेती की अवधारणा

जैविक खेती एक कृषि प्रणाली है जो खेती की गतिविधियों को करने में प्राकृतिक सिद्धांतों और तकनीकों का उपयोग करती है। इस प्रकार की खेती का उद्देश्य हानिकारक रसायनों का उपयोग किए बिना उच्च गुणवत्ता वाले, स्वस्थ और पर्यावरण के अनुकूल भोजन का उत्पादन करना है। जैविक खेती की अवधारणा उस दर्शन और पारंपरिक कृषि पद्धतियों से उत्पन्न हुई है जो प्राकृतिक तरीकों के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण के संरक्षण पर जोर देती है। जैविक खेती का मानना है कि प्राकृ

तिक पर्यावरण संतुलन में होना चाहिए और रसायनों और कीटनाशकों से प्रभावित नहीं होना चाहिए। जैविक खेती में, कुछ अवसरों पर सिंथेटिक उर्वरकों और कीटनाशकों की अनुमति है, लेकिन बहुत सीमित मात्रा में या अधिमानतः बिल्कुल भी नहीं। इसके बजाय, जैविक कृषि को पौधों के पोषण के स्रोत के रूप में प्राकृतिक सामग्रियों का उपयोग करना चाहिए, विशेष रूप से उर्वरकों के संदर्भ में, जैसे कि खाद, हरी खाद और जैविक अपशिष्ट उर्वरक। इसका उद्देश्य मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखना और मिट्टी का प्राकृतिक संतुलन बनाए रखना है। जैविक खेती के सामाजिक और आर्थिक पहलुओं पर भी ध्यान देती है। जैविक खेती टिकाऊ खेती के तरीकों को बढ़ावा देती है और किसानों और कृषि मजदूरों के अधिकारों का सम्मान करती है।

इसके अलावा, जैविक खेती में पारदर्शिता और जवाबदेही भी शामिल है, जिसमें किसानों को अच्छे कृषि मानकों और प्रथाओं को बनाए रखने की जिम्मेदारी होती है। जैविक खेती प्रमाणन यह गारंटी देता है कि उत्पादित उत्पाद सख्त मानकों को पूरा करते हैं और किसान अच्छी खेती प्रथाओं का पालन करते हैं।

जैविक खेती के लाभ

जैविक खेती के लाभ न केवल बेहतर गुणवत्ता और स्वस्थ कृषि उत्पादों के लिए हैं, बल्कि पर्यावरण, स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था के लिए भी कई तरह के लाभ हैं। यहाँ कुछ ऐसे लाभ दिए गए हैं जो जैविक खेती से प्राप्त किए जा सकते हैं:

1. पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण संरक्षण जल, मिट्टी, वायु, वनस्पतियों और जीवों सहित जीवित पर्यावरण की गुणवत्ता को संरक्षित और बनाए रखने का एक प्रयास है। पर्यावरण संरक्षण का मुख्य लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि जीवित पर्यावरण वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए स्वस्थ और उत्पादक बना रहे। किसान फसल चक्र, प्राकृतिक शिकारी आबादी के रखरखाव और जैविक पदार्थों का उर्वरक के रूप में उपयोग करके पौधों को बढ़ने और कीटों के हमलों को रोकने में मदद करते हैं। इसलिए, कृषि पारिस्थितिकी तंत्र में प्राकृतिक संतुलन बनाए रखते हुए खेती की प्रक्रिया के प्रत्येक उचित चरण से गुजरना आवश्यक है और यह सुनिश्चित करना है कि खेती के तरीकों से पर्यावरण को नुकसान न पहुंचे।

जैविक खेती में टिकाऊ खेती के तरीके भी शामिल हैं, जैसे कि यह सुनिश्चित करना कि खेती के तरीके मिट्टी, पानी और हवा को नुकसान न पहुँचाएँ और इससे होने वाले उत्पाद उच्च गुणवत्ता वाले हों। यह सुनिश्चित करता है कि वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए रहने का वातावरण स्वस्थ और उत्पादक बना रहे।

2. भोजन की गुणवत्ता

जैविक खेती से उत्पादित कृषि उत्पाद स्वास्थ्यवर्धक और उच्च गुणवत्ता वाले होते

हैं, क्योंकि उनमें हानिकारक रसायन नहीं होते हैं। इसका मतलब है कि हमारा भोजन अधिक पौष्टिक होगा और उसका स्वाद अधिक प्राकृतिक होगा। इसके अलावा, जैविक खेती यह गारंटी देती है कि उत्पादित पौधों और जानवरों के साथ अच्छा और निष्पक्ष व्यवहार किया जाता है, जो भोजन की गुणवत्ता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा।

3. कृषि साझेदारी और अर्थव्यवस्था

जैविक खेती कृषि साझेदारी और स्थानीय आर्थिक विकास को बढ़ावा देती है। जैविक खेती किसानों की आय बढ़ाने और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में मदद करती है, क्योंकि इससे यह सुनिश्चित होता है कि पैसा समुदाय के भीतर ही रहे। इसके अलावा, जैविक खेती यह सुनिश्चित करके राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को बनाए रखने में भी मदद करती है कि घरेलू कृषि उत्पाद वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धी बने रहें।

4. मिट्टी की उर्वरता

जैविक खेती पर्यावरण के अनुकूल खेती तकनीकों जैसे फसल चक्र, प्राकृतिक कीट नियंत्रण और उर्वरक के रूप में जैविक पदार्थों के उपयोग का उपयोग करके प्राकृतिक मिट्टी की उर्वरता को बढ़ावा देती है। इसका मतलब है कि मिट्टी सालों तक उपजाऊ और उत्पादक बनी रहती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि खेती स्थायी रूप से जारी रह सकती है।

5. किसान स्वास्थ्य

जैविक खेती हानिकारक रसायनों के उपयोग से बचकर किसानों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देती है। गैर-जैविक खेती में कीटनाशकों और रसायनों के उपयोग से अवशेष खाने वाले भोजन में मिल सकते हैं।

अध्ययनों से पता चला है कि लंबे समय तक कीटनाशकों के संपर्क में रहने से कैंसर का खतरा बढ़ सकता है। दूसरी ओर, जैविक खेती कीटों को रोकने और मिट्टी के पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए प्राकृतिक तरीकों का उपयोग करती है, जिससे हानिकारक रसायनों के संपर्क में आने का जोखिम कम हो जाता है।

जैविक और गैर-जैविक खेती के बीच अंतर

जैविक और गैर-जैविक खेती में तकनीक, उत्पाद और पर्यावरणीय प्रभावों के मामले में महत्वपूर्ण अंतर हैं। जैविक और गैर-जैविक खेती के बीच कुछ मुख्य अंतर इस प्रकार हैं:

1. कीटनाशकों और रासायनिक उर्वरकों का उपयोग

गैर-जैविक खेती में कीटों को नियंत्रित करने और पौधों की वृद्धि में तेजी लाने के लिए कीटनाशकों और रासायनिक उर्वरकों का उपयोग किया जाता है। वहीं, जैविक खेती में फसल चक्र, जैविक कीट नियंत्रण और उर्वरक के रूप में जैविक सामग्री जैसी प्राकृतिक खेती तकनीकों का उपयोग किया जाता है। गैर-जैविक खेती में कीटनाशकों और रासायनिक उर्वरकों का उपयोग पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

2. उत्पाद की गुणवत्ता

गैर-जैविक खेती से प्राप्त कृषि उत्पादों में अक्सर कीटनाशक और रासायनिक उर्वरकों के अवशेष होते हैं। दूसरी ओर, जैविक कृषि उत्पादों को हानिकारक रसायनों से मुक्त होने की गारंटी दी जाती है और वे उच्च गुणवत्ता वाले और स्वस्थ होते हैं। इसके अतिरिक्त, जैविक खेती यह सुनिश्चित करती है कि उत्पादित पौधों और जानवरों के साथ

अच्छा और निष्पक्ष व्यवहार किया जाए, जिससे खाद्य गुणवत्ता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

3. पर्यावरणीय प्रभाव

गैर-जैविक खेती पर्यावरण को नुकसान पहुंचा सकती है जैसे कीटनाशकों और रासायनिक उर्वरकों के कारण होने वाला जल, मिट्टी और वायु प्रदूषण। वहीं, जैविक खेती हानिकारक रसायनों से बचकर और मिट्टी की उर्वरता को बढ़ावा देकर पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देती है।

इस पर्यावरणीय प्रभाव को समझने के लिए, जैविक खेती को सभी कृषि प्रक्रियाओं को उपयुक्त तकनीकों और सुरक्षित, सहायक सामग्रियों, जैसे मिट्टी और फसलों दोनों के लिए हानिरहित प्राकृतिक उर्वरकों के माध्यम से स्वाभाविक रूप से पूरा करना होगा।

4. कृषि प्रणाली

गैर-जैविक खेती गहन कृषि तकनीकों का उपयोग करके बड़े पैमाने पर उत्पादन और लागत दक्षता पर जोर देती है। वहीं, जैविक खेती प्राकृतिक और टिकाऊ कृषि तकनीकों का उपयोग करके पर्यावरण संरक्षण और उत्पाद की गुणवत्ता पर जोर देती है।

5. उत्पाद मूल्य

गैर-जैविक खेती से प्राप्त कृषि उत्पाद अक्सर कम उत्पादन लागत के कारण जैविक कृषि उत्पादों की तुलना में सस्ते होते हैं। दूसरी ओर, अधिक जटिल उत्पादन प्रक्रियाओं और उच्च उत्पादन लागत के कारण जैविक कृषि उत्पादों की कीमतें अधिक होती हैं। हालाँकि, कई लोग उत्पादों की गुणवत्ता और सुरक्षा में अपने विश्वास के कारण जैविक कृषि उत्पादों के लिए अधिक कीमत चुकाने को तैयार हैं।